Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

गुरु रविंद्रनाथ टैगोर एवं स्वामी विवेकानंद के शिक्षा के प्रति विचारों पर अध्ययन

Suvash Shukla[1]*, Dr. Sunil Kumar[2]

[1] Research Scholar, Lords University, Alwar (Rajasthan)

[2] Professor, Department of Education, Lords University, Alwar (Rajasthan)

सार - ***शिक्षा कुछ निश्चित लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए एक नियोजित गतिविधि है, जैसे सूचना प्रसारण या कौशल और चरित्र का विकास। इन उद्देश्यों में समझ, तर्क, करुणा और ईमानदारी की वृद्धि शामिल हो सकती है। शिक्षा को शिक्षा से अलग करने के उद्देश्य से, कई अध्ययन आलोचनात्मक सोच की आवश्यकता पर प्रकाश डालते हैं। जबकि कुछ सिद्धांत इस बात पर जोर देते हैं कि शिक्षा को एक छात्र की प्रगति की ओर ले जाना चाहिए, अन्य लोग उस शब्द की परिभाषा के पक्ष में हैं जो मूल्य-तटस्थ है। कुछ अलग अर्थों में, शिक्षा मानसिक स्थिति और स्वभाव को भी संदर्भित कर सकती है जो शिक्षित व्यक्तियों के पास होती है, न कि अभ्यास के बजाय। शिक्षा का मूल उद्देश्य सांस्कृतिक विरासत को भावी पीढ़ियों तक पहुंचाना था। आज के शैक्षिक उद्देश्यों में तेजी से नई अवधारणाएं शामिल हैं जैसे सीखने की स्वतंत्रता, समकालीन सामाजिक कौशल, सहानुभूति और परिष्कृत व्यावसायिक क्षमताएं।इस लेख में स्वामी विवेकानंद एवं गुरूरवींद्रनाथ टैगोर के शैक्षिक विचारों पर अध्यऔयक्रिया है***

कीवर्ड - स्वामीविवेकानंद, गुरूरवींद्रनाथ, शैक्षिक

----------X----------

प्रस्तावना

स्वामी विवेकानंद

भारतीय दार्शनिकों में सबसे बेहतरीन विचारकों में से एक स्वामी विवेकानंद हैं। उनका जन्म 12 जनवरी, 1863 को मकर संक्रांति दिवस, कोलकाता के प्रसिद्ध वकील श्री विश्वनाथ दत्त के घर में हुआ था। उनकी माता का नाम भुवनेश्वरी देवी था। युवा स्वामी विवेकानंद, जिनका असली नाम नरेंद्रदत्त था, एक बुद्धिमान और एथलेटिक एथलीट थे। गुरु श्री रामकृष्ण परमहंस के विचारों का उनके जीवन पर प्रभाव पड़ा। अपने गुरु के संपर्क में आने के बाद, उन्होंने विवेकानंद नाम कमाया। स्वामीजी ने भारतीय सभ्यता और दैनिक जीवन की गहन समझ के प्रयास में पूरे भारत का भ्रमण किया। इस अवधि के दौरान इसके दोषों से अवगत होने के बावजूद वे पूरी तरह से इस सभ्यता के पुनर्जन्म के लिए समर्पित हो गए। स्वामी विवेकानंद ने उस समय की परिस्थितियों का अवलोकन किया, जब पूरी भारतीय सभ्यता एक गहरी निराशा में घिरी हुई थी और ब्रिटिश साम्राज्य की गुलामी की बेड़ियों में जकड़ी हुई थी। उस समय स्वामी विवेकानंद के विचार और दर्शन एक तेज रोशनी की तरह समाज भर में सभी की जागरूकता को रोशन कर रहे थे। उन्होंने सोचा कि पूर्ण अंधकार का एकमात्र कारण अशिक्षा है।उन्होंने **'साविद्यायाविमुक्तये'** अर्थात विद्या ही मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करती है का सिद्धांत प्रतिपादित किया। युवाओं को स्वामी जी ने डर को ज्ञान बल, शारीरिक बल, आचरण बल और नैतिक आचरण बल के साथ बदलने की सलाह दी थी, जो जीवन में सबसे ज्यादा मायने रखता है। उनके आदर्श आधुनिक भारत और शेष विश्व में उतने ही लागू और प्रशंसनीय हैं जितने वे अतीत के भारत में थे, बदलते समय और परिस्थितियों के बावजूद।

स्वामी विवेकानंद के शैक्षिक विचार

- **मानसिक एवं बौद्धिक विकास-** उस व्यक्ति के बौद्धिक और मानसिक विकास की डिग्री के आधार पर, उन्हें यह एहसास नहीं हो सकता है कि उन्होंने कोई गतिविधि पूरी कर ली है, चाहे वह कितना भी छोटा या

www.ignited.in

महत्वपूर्ण क्यों न हो। विकास की बाधाओं को स्वीकार करते हुए विकल्पों को बढ़ाने का हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए क्योंकि यह जीवन की गतिशीलता का एक सार्वजनिक नियम है। स्वामीजी ने प्रत्येक भारतीय, विशेषकर बच्चों और युवा वयस्कों के बौद्धिक और मानसिक विकास से संबंधित विभिन्न विषयों पर बात की। इस वजह से, बौद्धिक विकास को समकालीन दुनिया के ज्ञान-विज्ञान के परिचय के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में शामिल किया गया था। स्वामीजी के अनुसार, भारत की गरीबी में योगदान देने वाला मुख्य कारक बौद्धिक और मानसिक उन्नति की कमी है। बच्चों को बौद्धिक रूप से आगे बढ़ने के लिए और अपनी ऊर्जा का उपयोग खुद को, समाज और देश को बनाने के लिए करने में सक्षम होने के लिए, स्वामीजी सलाह देते हैं कि उन्हें कम उम्र से ही योग और ध्यान जैसी मानसिक विकास प्रथाओं का ज्ञान सिखाया जाना चाहिए।

- **नैतिक एवं चारित्रिक विकास** – व्यक्ति के लक्षण, चरित्र और नैतिक विकास यह निर्धारित करते हैं कि वे एक व्यक्ति के रूप में कैसे विकसित होते हैं। दूसरे शब्दों में, नैतिक और चरित्र विकास हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य और हमारे द्वारा किए जाने वाले प्रत्येक कार्य का आधार है। स्वामी विवेकानंद ने भारत में शिक्षा के लक्ष्यों में से एक के रूप में चरित्र विकास पर जोर दिया। चरित्र व्यक्ति को अपने आप में भरोसेमंद, मेहनती, मिलनसार और मजबूत बनाता है। भारतीय शिक्षा में अकादमिक विकास को बढ़ावा देने के अलावा, उन्होंने अगली पीढ़ियों में नैतिक अखंडता स्थापित करने का भी लक्ष्य रखा। भारत के युवा देश के भविष्य के लिए एक मजबूत नैतिक नींव रखें। स्वामी विवेकानंद ने कहा - "आपके परिवार में कोई भी - आपकी माँ, पिता, भाई-बहन, दोस्त या पत्नी- आपके द्वारा नहीं बदला जा सकता है। अब आप केवल अपने उच्च चरित्र के कारण खुद को बदल सकते हैं"। अपने सहयोग और हाथों से अपना भविष्य बनाएं। हम अपनी सोच का योग हैं। बच्चों की बुराइयों को सद्गुणों में बदलने की क्षमता के साथ हमारी शिक्षा प्रणाली का निर्माण करने की जरूरत है।

- **शारीरिक विकास**- संसार में सब कुछ प्राप्त करने का आधार शारीरिक शक्ति है। स्वामीजी के अनुसार, सभी की जिम्मेदारी होनी चाहिए कि वे अपने शारीरिक स्वास्थ्य को बनाए रखें। यह दावा किया गया है कि खुशी की बढ़ती गणना में "शुरुआती खुशी और स्वस्थ शरीर" सबसे पहले आता है। स्वामी जी अपनी शिक्षाओं में भारतीय जनता के सामने यह तर्क प्रस्तुत करते हैं कि स्वस्थ तन और मन साथ-साथ चलते हैं। केवल शारीरिक कौशल ही भारतीयों की पूर्व महानता को बहाल कर सकता है। उनका मत था कि बहुत सी बीमारियाँ शारीरिक दुर्बलता में शरण लेती हैं। ये सारी खामियां आदमी को कायर बना देती हैं। और अंत में, समाज की कायरता व्यक्ति के साथ विलीन हो जाती है। वह यह कहते हुए कायरता का परिचय देते हैं, "ऐसी खामियां अभी हाल ही में हमसे जुड़ी हैं और हमारी जाति को असहाय बना सकती हैं। ऐसा लगता है कि पिछले एक हजार वर्षों से हमारे जातीय अस्तित्व का एकमात्र ध्यान इस बात पर रहा है कि हम उत्तरोत्तर कमजोर कैसे हो सकते हैं। इस समय , जो हमें कुचलना चाहता है, वह वास्तव में केंचुओं की तरह हो गया है, जो सभी के पैरों के करीब फिसल रहा है। हमारे अपने कार्यों के कारण हमारा देश इस स्थिति में पहुंच गया है। मजबूत शरीर और शक्तिशाली इच्छाशक्ति वाले युवा, साथ ही साथ उनके शरीर में मजबूत मांसपेशियों और मजबूत नसों वाले युवा , इसे दूर करने के लिए आवश्यक हैं। उन्होंने कहा, "हमें लोहे के भंडार और स्टील की नसों की आवश्यकता है, न कि तुच्छ विचार जो कमजोरी का कारण बनते हैं। हमें रक्त में गति और नसों में शक्ति चाहिए।".

- **समाजसेवा की भावना का विकास** – स्वामीजी के अनुसार, शिक्षा वह है जो व्यक्ति को समाज या देश के लाभ के लिए अपनी शिक्षा का उपयोग करने की अनुमति देती है। उन्होंने शिक्षितों से समाज के वंचित सदस्यों की सहायता करने, उन्हें जगाने और उनके उत्थान के लिए काम करने की कामना की। उन्होंने कहा कि भारत के निम्न वर्ग के नागरिकों का उत्थान ही देश को वास्तव में आगे बढ़ाने का एकमात्र तरीका होगा। उन्होंने केवल मानवता के कर्तव्य को भगवान की भक्ति के रूप में देखा। कोई भी देश महान इसलिए बनता है क्योंकि उसकी शिक्षित जनता वहां व्याप्त सामाजिक बुराइयों को मिटाने के लिए कटिबद्ध होती है।

- **नारी शिक्षा का विकास** – स्वामी विवेकानंद के अनुसार, महिलाएं सीता की पवित्रता और उच्च आकांक्षाओं की सर्वश्रेष्ठ अभिव्यक्ति हैं। उनके विचारों ने उस दौर में समाज में कर्षण प्राप्त किया जब भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति भयावह थी। महिलाओं की दयनीय स्थिति का एकमात्र और एकमात्र कारण स्वामी जी को शिक्षा का संकीर्ण वितरण माना जाता है। उन्होंने महिलाओं की शिक्षा को लड़कों के बराबर रखने की वकालत की है। महिलाओं को ऐसी शिक्षा मिलनी चाहिए जो उन्हें सबसे कठिन परिस्थितियों में भी स्वतंत्र होने

www.ignited.in

और मन की शांति बनाए रखने में सक्षम बनाती है। उन्हें इतिहास, पौराणिक कथाओं, घरेलू विज्ञान, ललित कला और परिवार विज्ञान में एक मजबूत शिक्षा प्राप्त करनी चाहिए। महिलाओं की शिक्षा में धर्म, आत्मरक्षा, योग, ध्यान, संतान पालन, साहस आदि के पाठों को प्राथमिकता दी गई। उनका तर्क है कि ईश्वरीय, बुद्धिमान और बहादुर माताओं से पैदा हुए बच्चे अपने कार्यों से अपने देश को गौरवान्वित करते हैं। उच्च सभ्यता, संस्कृति और ज्ञान के परिणामस्वरूप देश में उन्नति होगी।

- **व्यावसायिक शिक्षा का विकास** – स्वामीजी के जन्म के समय, भारत भुखमरी, गरीबी और शक्तिहीनता सहित कई मुद्दों से जूझ रहा था। अंग्रेजों के शोषण और गुलामी के बंधनों ने सबको घेर लिया। यह देखकर कि भारत एक गुलाम था, स्वामीजी ने भारत को स्वतंत्र करने की इच्छा व्यक्त की। उन्होंने उन राष्ट्रों का भी अवलोकन किया जो इसके विपरीत समृद्ध जीवन व्यतीत कर रहे थे। उन कारणों का अवलोकन किया, जिनके पीछे विज्ञान, शिक्षा, नवाचार और प्रौद्योगिकी की उन्नति का इतिहास था। इस वजह से, उन्होंने स्कूल में केवल आध्यात्मिकता रखने के लिए पर्याप्त सोचने के बजाय शिक्षा के माध्यम से शिक्षा के माध्यम से उद्योग और अन्य व्यवसायों में प्रशिक्षण को विलय करने पर बहुत ध्यान दिया।

- **धार्मिक तथा आत्मिक शक्ति का विकास** – धर्म की नींव पर स्वामी विवेकानंद के विचार अत्यधिक विविध थे। उनका दावा है कि धर्म वह है जो हमें प्रेम का मूल्य देता है और हमें पूर्वाग्रह और घृणा से बचाता है। धर्म को दूसरों का फायदा उठाए बिना समानता को बढ़ावा देना चाहिए। समाज के प्रत्येक सदस्य को धार्मिक शिक्षा के वातावरण में समान चयन करने में सक्षम होना चाहिए। आध्यात्मिक आधार मनुष्य के संपूर्ण विकास का आधार होना चाहिए। उनके अनुसार, बच्चे को कम उम्र से ही भारतीय संस्कृति और दर्शन में शिक्षित किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों को अपनी आध्यात्मिक और धार्मिक शक्ति बनाने में मदद करने के लिए योग, ध्यान और कर्म के शुरुआती प्रदर्शन पर विशेष ध्यान दिया गया है।

- **विश्व बंधुत्व की भावना का विकास-** स्वामी विवेकानंद की शिक्षा में वसुधैव कुटुम्बकम की खेती के साथ-साथ देशभक्ति की भावना भी शामिल थी। उनकी राष्ट्रीयता सीमित नहीं लगती थी; बल्कि, इसमें व्यापकता की भावना थी। वह वैश्विक भाईचारे की भावना में विश्वास करते थे क्योंकि उन्होंने ब्रह्मांड को सभी लोगों में उस परम अस्तित्व को प्रतिबिंबित करने के रूप में देखा था।

- **वर्तमान में प्रासंगिकता-** प्राचीन भारतीय गुरुकुल प्रणाली और वर्तमान समकालीन शिक्षा प्रणाली सहित, मूल्यों और आदर्शों का मुख्य घटक पूरे इतिहास में शिक्षा प्रणालियों का हिस्सा रहा है। स्वामीजी की शैक्षिक अवधारणा न केवल प्राचीन भारत में शिक्षा के लिए सहायक थी, बल्कि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में भी यह बहुत अधिक उत्कृष्ट प्रतीत होती है। वर्तमान परिवेश में लगातार बढ़ती कठिनाइयों, तनाव, प्रतिस्पर्धा, प्रगति और आत्मनिर्भर बनने की इच्छा का पीछा करते हुए आध्यात्मिक सिद्धांतों के साथ आगे बढ़ना बेहद मुश्किल है। युवा पीढ़ी अब भारतीय शिक्षा प्रणाली के लिए एक चिंता का विषय है क्योंकि वे जीवन में बेकार की भावना, अनुशासनहीनता, बेरोजगारी, अकेलापन और पेशेवर प्रतिस्पर्धा की भावना से लाए गए शारीरिक और मानसिक मुद्दों से जूझ रहे हैं। इन मुद्दों के परिणामस्वरूप विद्यार्थियों के बीच कई मतभेद सामने आए हैं, जिसमें एक अनावश्यक रूप से मांग वाला पाठ्यक्रम, ज्ञान का एक खराब स्तर, एक त्रुटिपूर्ण पाठ्यक्रम और सक्षम सलाह का अभाव शामिल है। स्वामी विवेकानंद का जीवन दर्शन, शैक्षिक सिद्धांत और जीवन जीने की कला ऐसी परिस्थिति में एक महत्वपूर्ण संकल्प प्रदान कर सकती है। सनातन सिद्धांतों और व्यावहारिक आदर्शों को इस तरह से समायोजित किया जा सकता है जो वर्तमान शिक्षा प्रणाली के लिए फायदेमंद और प्रासंगिक दोनों हो।

स्वामी विवेकानंद के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

"जो शिक्षा प्रणाली आम आदमी को जीवन के संघर्ष का सामना करने की क्षमता प्रदान करने में सहायक नहीं है , मनुष्य की नैतिक शक्ति , उसकी सेवा-शक्ति, उसके अंदर शेर की तरह है। साहस का विकास नहीं करती है , वह भी योग्य है शिक्षा के नाम पर?" लेखक एक मार्ग में शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में पूछता है। स्वामी विवेकानंद ने निम्नलिखित को प्रमुख शैक्षिक लक्ष्यों के रूप में सूचीबद्ध किया:

- **अन्तर्निहित पूर्णता की अभिव्यक्ति:** मानव पूर्णता का विकास शिक्षा के लिए विवेकानंद की सर्वोच्च प्राथमिकता है।

- **मानव-निर्माण करना:** स्वामी विवेकानंद के अनुसार, शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य मनुष्य का

निर्माण करना है। "मनुष्य का निर्माण शिक्षा से होता है ," वे कहते हैं। मनुष्य की उन्नति सभी शोधों का अंतिम उद्देश्य है।

- **शारीरिक पूर्णता:** विवेकानंद का मानना था कि मनुष्य तभी पूर्णता प्राप्त कर सकता है जब उसका शरीर अच्छा स्वास्थ्य में हो। पूर्णता प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा शारीरिक दुर्बलता है।

- **चरित्र का निर्माण:** स्वामी विवेकानंद का मानना था कि शिक्षा व्यक्ति को अपने चरित्र को विकसित करने में मदद कर सकती है। उनका मानना है कि एक सफल देश के विकास के लिए मजबूत नागरिकता की आवश्यकता होती है।

- **जीवन-संघर्ष की तैयारी:** छात्रों की शिक्षा उन्हें उनके भविष्य के लिए तैयार करती है। विवेकानंद के अनुसार, जीवन की चुनौतियों की तैयारी के लिए तकनीकी और वैज्ञानिक शिक्षा आवश्यक है।

- **राष्ट्रीयता की भावना का विकास:** भारत के दुख ने विवेकानंद को आंसू बहाए। उन्होंने शिक्षा की एक ऐसी प्रणाली बनाने का लक्ष्य रखा जो भारत में छात्रों को देशभक्ति की भावना के लिए प्रोत्साहित करे।

रविंद्रनाथ टैगोर

7 मई, 1861 को रवीन्द्र नाथ का जन्म बंगाल में एक पढ़े-लिखे, संपन्न और सम्मानित परिवार में हुआ था। उनके पिता का पूरा नाम महर्षि देवेंद्र नाथ टैगोर था। देवेंद्र नाथ ने यह सुनिश्चित किया कि टैगोर की संस्कृत , भारतीय दर्शन और खगोल विज्ञान (ज्योतिष शिक्षा) में शिक्षा हो।

रवींद्रनाथ टैगोर को 1877 ई. में कानून का अध्ययन करने के लिए इंग्लैंड भेजा गया था , लेकिन वे असंतुष्ट थे और बिना डिग्री अर्जित किए ही चले गए। बाद में वह भारत लौट आए। रवींद्रनाथ टैगोर की अधिकांश स्कूली शिक्षा स्व-अध्ययन और गृह शिक्षा के माध्यम से घर पर हुई।

कम उम्र से ही, उन्होंने बंगाली पत्रिकाओं में योगदान दिया और जनता के लिए निबंधों का प्रसार करना शुरू कर दिया। उन्होंने कई उत्कृष्ट नाटकों, पुस्तकों और कविताओं का निर्माण किया। नतीजतन, उन्होंने केवल एक कुशल कवि, लेखक, नाटककार, चित्रकार और दार्शनिक के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की। एक ऋषि का नाम प्राप्त करने के बाद, उन्हें बाद में गुरु देव के रूप में जाना जाने लगा। उनके पहले प्रकाशन गीतांजलि ने उन्हें नोबेल पुरस्कार दिलाया। उन्हें उसी वर्ष (1913 ई.) कलकत्ता विश्वविद्यालय से " डिलीट" की मानद उपाधि मिली। 1915 में भारत सरकार द्वारा टैगोर को "टैगोर नाइट" की उपाधि से सम्मानित किया गया था, लेकिन उन्होंने "जलियांवाला बाग" हत्या के विरोध में इसे रद्द कर दिया। उन्होंने 22 सितंबर, 1921 को विश्व भारती के नाम से प्रसिद्ध शैक्षणिक प्रतिष्ठान की स्थापना की। 20 वर्षों तक, उन्होंने इस संस्था के विकास के लिए अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। 1941 में, लीला का जीवन आखिरकार समाप्त हो गया।

टैगोर के अनुसार शिक्षा का अर्थ

आदर्श शिक्षा वह है जो हमारे जीवन को संपूर्ण सृष्टि के साथ सामंजस्य बिठाती है , टैगोर के अनुसार , जो व्यापक अर्थों में "शिक्षा" शब्द का उपयोग करते हैं। सबसे अच्छी शिक्षा वह है जो हमारे जीवन को हर चीज के साथ सामंजस्य बिठाती है। टैगोर ने अपने समग्र दृष्टिकोण में दुनिया में चार अतिरिक्त अचल , पदार्थ और चेतन, जीवित और निर्जीव वस्तुओं को संदर्भित किया है। जब तक हमारी सारी ऊर्जाएं पूरी तरह से विकसित नहीं हो जातीं और अपने अधिकतम बिंदु तक नहीं पहुंच जातीं - जिसे टैगोर ने पूर्ण मानवता कहा था - क्या हमारा अस्तित्व इन चीजों के अनुरूप हो सकता है। हमें इस स्थिति तक पहुँचाने के लिए शिक्षा को क्या करना चाहिए। टैगोर के अनुसार शिक्षा इस दृष्टिकोण से विकास की एक प्रक्रिया है। वह एक व्यक्ति के शारीरिक , बौद्धिक, आर्थिक, व्यावसायिक, धार्मिक और आध्यात्मिक स्वयं के विकास को प्रोत्साहित करती है। नतीजतन , टैगोर की राय में , शिक्षा कई अलग-अलग रूप लेती है। टैगोर व्यापक अर्थों में शिक्षा की पारंपरिक भारतीय अवधारणा के प्रति सचेत रहे हैं। सा विद्या या विमुक्तये वह आदर्श है। यह दर्शन कहता है कि आध्यात्मिक ज्ञान प्रदान करके शिक्षा मनुष्य को जीवन और मृत्यु के बंधन से मुक्त करती है। इस पुरानी शैक्षिक अवधारणा का विस्तार टैगोर ने किया है।

www.ignited.in

उनका दावा है कि ज्ञान लोगों को आर्थिक , सामाजिक, राजनीतिक और मानसिक सहित विभिन्न प्रकार की गुलामी से मुक्त करता है। चूँकि यह वास्तविक शिक्षा है , मनुष्य को वह जानकारी प्राप्त करनी चाहिए जो उसके पूर्ववर्तियों ने शिक्षा के माध्यम से अर्जित की है। जैसा कि टैगोर ने खुद कहा था: "सच्ची शिक्षा में एकत्रित उपयोगी जानकारी के हर घटक का उपयोग करना, उस घटक की वास्तविक प्रकृति को समझना और जीवन में जीवन के लिए एक सच्चे आश्रय का निर्माण करना शामिल है।"

टैगोर के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

शारीरिक विकास– टैगोर के अनुसार स्वस्थ मन के लिए स्वस्थ शरीर आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य बच्चे का शारीरिक विकास है। उन्होंने शारीरिक विकास के लिए जरूरी होने पर कुछ समय के लिए शिक्षा छोड़ने की सलाह दी। टैगोर ने शारीरिक विकास के लिए एक स्वस्थ आहार की आवश्यकता पर बल दिया, यह दावा करते हुए कि व्यायाम और खेल पेड़ों पर चढ़ने, तालाबों में गोता लगाने , फल लेने और प्रकृति माँ के खिलाफ कई अन्य पापों में संलग्न होने जैसी गतिविधियों के लिए महत्वपूर्ण हैं।

मानसिक विकास– टैगोर के अनुसार , वास्तविक शिक्षा लोगों को शारीरिक रूप से जानने का प्रयास कर रही है। इससे न केवल कुछ जानकारी प्राप्त होती है , बल्कि ज्ञान की क्षमता भी बढ़ती है , जो कक्षा के व्याख्यानों से नहीं हो सकती। उनका मानना था कि ज्ञान केवल उन परिस्थितियों में सीधे प्राप्त किया जा सकता है जो दैनिक जीवन के लिए प्रासंगिक हैं। इसके लिए युवा को बाहरी गतिविधियों में शामिल होने के अधिक से अधिक अवसर होने चाहिए।

नैतिक एवं आध्यात्मिक विकास– एक आदर्शवादी होने के नाते, टैगोर ने जोर देकर कहा कि नैतिक और आध्यात्मिक विकास शिक्षा का लक्ष्य होना चाहिए। उन्होंने विभिन्न नैतिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों पर लिखा है , और उन्होंने इन लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए आंतरिक दृढ़ता , आत्म-नियंत्रण, धैर्य और ज्ञान की आवश्यकता पर जोर दिया है।

समस्त शक्तियों का विकास– टैगोर के अनुसार , शिक्षा का प्राथमिक लक्ष्य बच्चे की गुप्त क्षमताओं को जगाना है। प्रसिद्ध व्यक्तिवादी टैगोर। इस प्रकार उन्होंने व्यक्ति के संपूर्ण विकास पर अत्यधिक बल दिया। उनका मानना था कि प्रत्येक व्यक्ति के साथ सम्मान और स्वतंत्रता के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इसके अलावा, उन्होंने सोचा कि शिक्षा लोगों को मानसिक स्वतंत्रता प्रदान करे ताकि वे किताबी जानकारी प्राप्त करने के अलावा अन्य तरीकों से स्वायत्त रूप से विकसित हो सकें।

सामाजिक विकास– टैगोर समाजवादी होने के साथ-साथ व्यक्तिवादी भी थे। उन्होंने समाज और सामाजिक कर्तव्य को उतना ही महत्व दिया जितना उन्होंने व्यक्ति और उसके व्यक्तित्व के विकास पर रखा। उनका मानना था कि व्यक्ति को आध्यात्मिक संतुष्टि के लिए सामाजिक विकास आवश्यक है। इस प्रकार उन्होंने शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति को ऐसे सामाजिक बंधन से जोड़ने की कोशिश की ताकि वे सामाजिक विकास के लिए काम कर सकें। नतीजतन, उन्होंने अपनी फर्म के अंदर टीम वर्क और सार्वजनिक सेवा को प्राथमिकता दी।

राष्ट्रीयता का विकास– एक देशभक्त होने के नाते , रवींद्रनाथ टैगोर का मानना था कि शिक्षा राष्ट्रीय जागृति लाने का सबसे प्रभावी तरीका है। उन्होंने अपने विचारों , शब्दों और कविता से दूसरों में देशभक्ति और राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रेरित किया।

अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टिकोण का विकास– टैगोर की राय में शिक्षा का अंतिम लक्ष्य छात्र में वैश्विक जागरूकता की भावना पैदा करना है। उन्होंने सार्वभौमिक सद्भाव लाने की मांग की। यह सुनिश्चित करने के लिए कि बच्चा विश्व समाज की उन्नति के लिए काम करना जारी रखेगा , वह चाहता था कि बच्चा शिक्षा के माध्यम से इसके लिए बाध्य हो।

टैगोर के अनुसार शिक्षण की विधियाँ

टैगोर ने तर्क दिया कि शिक्षा को जीवन से पहले आना चाहिए और तत्कालीन उबाऊ शिक्षा प्रणाली की कृत्रिमता

www.ignited.in

पर हमला किया, जैसे कि मौजूदा पाठ्यक्रम। इसे जीवन की वास्तविकता पर आधारित होना चाहिए। इस अर्थ में , धारणा यह थी कि एक बच्चे की वृद्धि उसके हितों और झुकाव के अनुसार होनी चाहिए। ऐसा करने के लिए उसके पास व्यक्तिगत प्रयास के माध्यम से स्रोतों से सीधे सीखने का अवसर होना चाहिए। नतीजतन, टैगोर ने अपने प्रसिद्ध स्कूल शांतिनिकेतन में नीचे सूचीबद्ध गतिविधियों को लागू किया क्योंकि उन्हें लगा कि वे बच्चों की शिक्षा के लिए उपयुक्त हैं।

भ्रमण के समय पढ़ना: टैगोर के अनुसार, एक बच्चे का मन और शरीर कक्षा में मिलने वाले निर्देश से अप्रभावित रहता है। ऐसा हास्यास्पद निर्देश बेकार है। यात्रा के दौरान बच्चों की मानसिक क्षमताएं जागृत रहती हैं , वे टिप्पणी करते थे। परिणामस्वरूप, बच्चे विभिन्न विषयों को केवल देखकर ही उनके बारे में बहुत कुछ सीख सकते हैं। इस दृष्टिकोण के अनुसार, टैगोर के शब्दों में , यात्रा करते समय पढ़ना शिक्षा का आदर्श रूप है।

वाद-विवाद तथा प्रश्नोत्तर विधि: टैगोर के अनुसार , सच्ची शिक्षा केवल साहित्य के संग्रह के बजाय जीवन और समाज के अध्ययन पर केंद्रित है। उन्होंने एक बार कहा था कि सवाल और जवाब बच्चों को पढ़ाने का सबसे अच्छा तरीका है। इसके अलावा , उन्हें विभिन्न प्रकार के मुद्दों को प्रस्तुत किया जाना चाहिए ताकि वे चर्चा कर सकें और जल्दी से समाधान ढूंढ सकें।

क्रिया विधि: टैगोर के लिए कार्रवाई की धारणा बहुत महत्वपूर्ण थी। उनका विचार था कि शरीर और बुद्धि दोनों गतिविधि के माध्यम से शक्ति प्राप्त करते हैं। इस वजह से, उन्होंने शांति निकेतन के छात्रों के लिए एक या एक से अधिक हस्तशिल्प का अध्ययन करना आवश्यक बना दिया। जब एक नौजवान ने टैगोर से पूछा कि उन्हें निर्देश कब मिल रहा है, "क्या मैं दौड़ सकता हूं ?" तो वे जवाब देते थे , "बिल्कुल।" इससे पता चलता है कि वह कार्रवाई की अवधारणा में कितनी दृढ़ता से विश्वास करते थे। उन्होंने सोचा कि छलांग लगाने , पेड़ों पर चढ़ने और फल लेने से बच्चे की थकान दूर हो जाती है, सीखने की उनकी क्षमता में सुधार होता है और उनके अनुभवों का मूल्य बढ़ता है।

मातृ भाषा द्वारा शिक्षण: टैगोर की राय में मातृभाषा सबसे सरल प्रकार की शिक्षा है। उन्होंने कहा कि छात्रों को विदेशी भाषा पढ़ाना अन्याय है। इसके अलावा , टैगोर ने सभी लोगों के बीच बंधुत्व के विचार का समर्थन किया। उन्होंने कहा कि इस प्रकार पाठ्यक्रम में सभी सभ्यताओं के बारे में जानकारी शामिल होनी चाहिए।

खेल द्वारा शिक्षण: टैगोर के अनुसार बच्चों को खेल के माध्यम से शिक्षित किया जाना चाहिए। खेलने के माध्यम से सिखाने का सबसे अच्छा तरीका है क्योंकि बच्चों को खेल पसंद है। एक ही समय में स्वतंत्रता और आनंद को महसूस करें। यह शिक्षा को सुखद और सरल बनाता है।

स्वानुभव द्वारा शिक्षण: टैगोर के अनुसार, शिक्षा बच्चे के जीवन पर उन्मुख होनी चाहिए क्योंकि शिक्षण इस तरह से किया जाना चाहिए जिससे बच्चे को अपने स्वयं के अनुभवों से सबक लेने की अनुमति मिल सके। शिक्षा नकली होना बंद हो जाती है जब यह वास्तविक जीवन में समझ में आने लगती है।

निष्कर्ष

महान राष्ट्रवादी और देशभक्त स्वामी विवेकानंद। उन्होंने अपने व्याख्यानों और लेखन, विशेषकर युवा पीढ़ी के माध्यम से भारत के युवा लोगों में आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को प्रोत्साहित किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति के निर्माण में भी मदद की। उन्होंने उत्कृष्ट विचारों के साथ-साथ विदेशी ज्ञान और विज्ञान को शामिल करने पर जोर दिया। उनके सोचने का तरीका पूरी युवा पीढ़ी को गर्व के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है। वह अब हमारे बीच शारीरिक रूप से रहकर और अपने आध्यात्मिक ज्ञान और स्फूर्तिदायक विचारों को साझा करके देश को निर्देशित कर रहे हैं।

अपने काम और उपलब्धियों से, रवींद्रनाथ टैगोर दुनिया भर में अभिनव शिक्षकों के नेटवर्क में शामिल हो गए, जिनमें रूसो, पेस्टलोज़ी, फ्रोबेल, मोंटेसरी, डेवी और हाल ही में मैल्कम नोल्स शामिल हैं। हालांकि टैगोर, भारत के राष्ट्रीय गीत के लेखक, अपनी मातृभूमि के एक शानदार राजदूत हैं, वे दुनिया के एक सच्चे व्यक्ति भी हैं जो पारंपरिक भारतीय और समकालीन पश्चिमी संस्कृतियों दोनों के बेहतरीन पहलुओं का प्रतीक हैं। प्रकृति, संगीत और दैनिक जीवन के माध्यम से सीखना टैगोर के शैक्षिक

www.ignited.in

दर्शन के केंद्र में था। अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, उन्होंने शांतिनिकेतन की स्थापना की। यही कारण है कि मानव मन केवल अपने ज्ञान को आत्मसात करने में सक्षम है। कई व्यक्तित्व लक्षणों के महत्व और व्यावहारिक महत्व का टैगोर द्वारा विस्तार किया गया था।

संदर्भ सूची

1. उन्नीथन, टी.के.एन. (ईडी-) , शिक्षा के माध्यम से मानव मूल्य, अहमदाबाद: गुजरात विद्यापीठ, प्रथम संस्करण, नवंबर 2005
2. प्रो. प्रसाद कृष्ण , मूल्यों में शिक्षा- मूल्य शिक्षा के लिए रणनीतियाँ और चुनौतियाँ।
3. डॉ नीना अनेजा। प्रिंसिपल , एएस कॉलेज ऑफ एजुकेशन, खन्ना, (पंजाब), भारत वर्तमान शिक्षा प्रणाली में मूल्य शिक्षा का महत्व और शिक्षक की भूमिका। शोध पत्र।
4. जोवन क्रिस्टो, स्कूलों में मूल्यों का महत्व: चरित्र शिक्षा को लागू करना , विनोना स्टेट यूनिवर्सिटी रोचेस्टर सेंटर।
5. स्वामी विवेकानंद - स्वामी निखिलानंद की जीवनी http://ibnlive.in.com/yuva/bio.pdf पर उपलब्ध है।
6. स्वामी विवेकानंद का पूर्ण कार्य , 9 खंडों में http://cwsv.belurmath.org/10 पर। रामचंद्र गुहा , आधुनिक भारत के निर्माता , पेंगुइन, नई दिल्ली , 2010,
7. http://www.healthmantra.com/vivekanan.shtml स्वामी विवेकानंद की शिक्षाएं और उद्धरण।
8. रेखा : रविन्द्र नाथ टैगोर और अरविंदघोष के शिक्षा दर्शनकातुलनात्मक अध्ययन एम . एड., शोधप्रबन्ध, महर्षि दयानंद विश्वविद्यालय रोहतक 2008
9. वालिया, जे. एस. "शिक्षा के दार्शनिक एवं सामाजिक आधार" अहिम लाल पब्लिकेशर्स, जलन्धर, 2007
10. निर्मल वर्मा विश्व के महान शिक्षा शास्त्री , आमेगा पब्लिके शन्स, नईदिल्ली 2006
11. सेठ कीर्तिदेव भारतीय शिक्षा दर्शन वैदिक प्रकाशन 1960
12. एन. आर. स्वरूप शिक्षा के दर्शनिव व समाज शास्त्रीय सिद्धांत, आर. लालबुक डिपो मेरठ 2003
13. हरिवंषतरूण मानव शिक्षा दर्शन एवं शैक्षिक समाज शास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नईदिल्ली 2003
14. शीलूमैरी एलेक्स शिक्षा दर्शन रजत प्रकाशन , नईदिल्ली 2008
15. औदिच्य हिमांश शिक्षा व उदीयमान भारतीय समाज, अवस्था प्रकाशन जयपुर 2006
16. http://**www.globalsolidarity.org**/articles/nonformal.html
17. http://**www.itihaas.com**/modern/tagore-profile.html
18. http**://www.kfionline.org**/krishnamurti/introduction
19. http://**preservearticles.com**/20105066344/contribution-ofrabindranath-tagore-in education.html
20. http://**www.ratical.org**/many_worlds/K/K1.html
21. http://**www.wiseoldgoat.com**/papers/krishnamurti.html

Corresponding Author

Suvash Shukla*

Research Scholar, Lords University, Alwar (Rajasthan)